IJAER/ November-December 2024/Volume-13/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

मध्यकालीन समाज में महिलाओ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन

निहाल सिंह जाटव,

अस्सिटेंन्ट प्रोफेसर (विषय इतिहास)

महर्षि अरबिन्द महाविद्यालय खेरली (अलवर)

सारांश

धनवान लोगों की महिलायें सम्पूर्ण शरीर पर आभूषण धारण करती थीं। अबुल फज़ल ने महिलाओं के 37 प्रकार के आभूषणों का उल्लेख किया है जिनमें से पाँच आभूषण तो सिर पर धारण करने के थे। इनमें 'चौक' और 'शीशफूल' मुख्य थे। कानों के लिए भोर भेंवर, बोली, चम्पाकली, करण फूल, पीपल पट्टी जैसे आभूषणों का रिवाज था। आरम्भ में नाक में कोई आभूषण धारण नहीं किया जाता था, परन्तु बाद में नाक में सोने की नथ या बेसर पहनी जाने लगी थी। इसी प्रकार, नाक में लोंग भी धारण की जाती थी। इनके अलावा महिलायो के शरीर के विभिन्न अंगों में धारण करने के लिए नेकलेस, हार, गुलूबन्द, बाजूबन्द, गजरा, कंगन, कड़े, चूड़ी, चन्द्रकंटिका, कटिमेखला, घुंघरू, पायल, बिछुआ, अंक, अंगूठी, आदि का प्रचलन था। धनवान महिलाओं के गहने सोने, चाँदी, जवाहरात के होते थे और गरीबों के चाँदी आदि केहोते थे। हाथी दांत की चूड़िया और कंगन, गेंडे की चूड़ियाँ और अंगूठियाँ बनाने का भी रिवाज था। एक तोले के आभूषण बनवाई करीब 64 दाम होती थी। अबुल फजल ने महिलायो के पहनावे के बारे में बताया है कि इस समय महिलायो में आभूषणों का भारी शौक था और अपनी क्षमता के अनुसार उन्हें धारण किया जाता था।

मुख्य शब्द महिला, समाज, वेशभूषा, कन्यादान, आदि

प्रस्तावना

हिन्दु और मुस्लिम महिलायें अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार रेशम या सूत के कपड़े धारण करती थीं। मुस्लिम महिलायें सामान्यतया पायजामा और कुर्ते का प्रयोग करती थीं। दुपट्टा हिन्दु–मुस्लिम दोनों वर्ग की महिलायें धारण करती थीं। अमीर महिलाएँ काबा और कश्मीरी शाल धारण करती थीं। पीटर डेला–वेला ने महिलायो की वेशभूषा का वर्णन करते हुए बताया है कि ''मुसलमानों की महिलायें इसी प्रकार के श्वेत वस्त्र या तो सादा अथवा सुनहरे फूलों से सुज्जित कर पहनती हैं।[1] उनका ऊपरी लिबास छोटा, किन्तु एक महिला की निस्बत एक मर्द के लिबास से अधिक मिलती–जुलती होती है। प्रायः उनके वस्त्र मूल्यवान और अच्छी मलमल के होते हैं और उनके पायजामे श्वेत या लाल रंग के होते हैं तथा बहुधा हर प्रकार के रंगों से रंजित नाना प्रकार के रेशमी कपड़ो के होते हैं। भारत की हिन्दु महिलाएँ साधारणतया लाल रंग के अतिरिक्त किसी दूसरे रंग का प्रयोग नहीं करती हैं और शरीर के अधिकतर भाग पर वह कपड़ा धारण नहीं करतीं, किन्तु एक कुर्ता पहनती हैं जिनकी बाँहें भुजा के मध्य भाग तक ही होती हैं और

कुछ महिलायें कोटि के नीचे पैरों तक वस्त्र (लहंगा) पहनती हैं। जब वह बाहर निकलती हैं तो एक साधारण बनावट के चौड़े आकार की चादर से अपने आपको ढँक लेती हैं। जिसका उपयोग मुसलमान महिला भी करती हैं।'' गरीब महिलायें साड़ी पहनती हैं और जिसके एक छोर से सिर को ढंक लेती हैं। साड़ी के अलावा वह चोली और अंगिया भी पहनती हैं। दक्षिण की महिलायें सिर नहीं ढंकती जैसा कि फरिश्ता ने वर्णन किया है। उसने बताया है कि दक्षिण में और गोलकुण्डा में महिलाया पुरूषों के साथ–साथ घूम लेती हैं। गिरदानों सिरगिस ने कालीकट की महिलायो के बारे में बताया है कि उच्च वर्ग की महिलायें कमर के ऊपर बहुत सफेद और मुलायम सूती वस्त्र पहनती है जबकि निम्न श्रेणी की महिलाएँ कमर के ऊपर वस्त्रहीन होती हैं। नूरजहाँ वेशभूषा की बड़ी शौकीन थी। उसने नूरमहली, पंचटोलिया, बदला, हेर दूदमी जैसे फैशन के नए वस्त्रों का प्रचलन किया था। निकोला कोंटी ने महिलायें की साजसज्जा का वर्णन करते हुए बताया है कि धनवान महिलाएँ सिर को सुनहरे जड़ाऊ कपड़े से ढंकती है और केशों को रेशमी डोरे से बाँधती हैं और बीच में बड़ा सुनहरा सूआ खोंसती हैं वह एक सुनहरा धागा जो सोने के मुलम्मे के विभिन्न रंगों से रंजित कपड़ों के टुकड़ों से बने होते हैं, बालों में लटकाती रहती हैं।[2]

कन्यादान

अधिकांश मुगल सम्राट में पवित्र कन्यादान करने की परमपरा थी जिसे औरंगजेब तक सब ने बखुबी निभाया था जैसे सम्राट में दान पुण्य (खैरात) करने की प्रवृति भी विद्यमान थी मुहम्मद तफाख्खुर की दो लड़कियों के विवाह के अवसर पर सम्राट ने पांच हजार रुपये कन्यादान के रूप में प्रदान किए। (बहर दो पज हज़ार रुपया कन्यादान मरहम्मत फरमूदन्द) इस फारसी अभिलेख में 'कन्यादान' शब्द प्रयोग किया गया है, इससे ज्ञात होता है कि हिन्दु–मुस्लिम दोनों की संस्कृति में यह शब्द सामान्य तौर पर सन्पूर्ण मुगलकाल मे प्रचलित थी और कन्यादान की प्रथा का प्रचलन था। एक अन्य अवसर पर सैय्यद मुतसव्वुर खां की पुत्री के विवाह के लिए औरंगजेब सम्राट ने एक हजार रुपये रूपये प्रदान किए। हसन अब्दाल के अभियान के अवसर पर सम्राट एक दिन बाग में ठहरा, जहाँ दीवार के नीचे एक वृद्धा का निवास गृह था। ज्ञात करने से मालूम हुआ कि बूढ़िया की दो अविवाहित पुत्रियां हैं। पुत्रियों के विवाह हेतु दो हजार रुपये प्रदान किए।

कन्यावध पर दण्ड ताहिर खां (सूबेदार मुल्तान) के नाम फरमान भेजा गया कि औरंगजेब सम्राट को सूचना मिली है कि उस तरफ के अधिकतर लोग कन्याओं के जन्म लेने पर उनका वध कर देते हैं। अतः तुम्हें चाहिए कि जो भी अपनी पुत्री का वध करे उसे इस कार्य से रोका जाए और उस पर 2500 रुपये दण्ड लगाया जावे और यदि कोई व्यक्ति दण्ड वहन करने के योग्य न हो तो उसे कडी हिदायत के साथ छूट दी जावे।

विधवाओं के साथ सहानुभूति

कुछ विधवाएं दानपुण्य लेने के लिए लाहौर से औरंगजेब सम्राट के दरबार में उपस्थित हुई जो वास्तब में गरीब थीं। लाहौर से आते समय सम्राट को नजर (भेंट) करने के लिए अपने साथ एक कुरआन शरीफ भी लेकर आईं। जब सम्राट के सम्मुख उक्त कुरआन शरीफ लाया गया तो उसने यह कहकर लौटा दिया कि, ''मैं इस प्रकार की पेशकश को स्वीकार नहीं करता हूँ विधवाओं को वापस दे दो जो खैरात देनी है वह दे दी जाएगी और कहा कि प्रत्येक की वास्तविक स्थिति वर्णन की जावे।'' विधवाओं की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उसने इस भेंट को लौटा दिया और यह भी प्रदर्शित कर दिया कि उन द्वारा भेंट करना या न करना सम्राट के खैरात के कार्य को प्रभावित नहीं कर सकता। यही प्रवृत्ति लगभग सभी मुगल सम्राटों में देखने को मिलती है।[3]

बलात कब्जे में की गई महिला को छुड़ाने के आदेश

जम्मू से प्राप्त 1680 ई0 के एक वकिय के अनुसार मुरीदखां थानेदार काहमरो के गुमाश्ता फतेहचन्द ने एक गरीब व्यक्ति की धर्मपत्नी को बलात तरीके से एक हिन्दु के हवाले करवा दी। उक्त गरीब बहुत गिड़गिड़ाया किन्तु सुनाई नहीं की। सम्राट ने आदेश दिए कि शाहजादा मुहम्मद आजम के नौकर अफगान खां, जो कि जम्मू की फौजदारी में है, को लिखा जावे कि उक्त गुमाश्ते को सम्राट के दरबार में उपस्थित होने हेतु रवाना करे और उक्त दुरवेश (गरीब) की स्त्री पुनः उसे दिलावे। इस प्रकार के बहुत से ऐसे अभिलेख उपलब्ध हैं जिनसे असहाय महिलायो के प्रति मुगलों की सहानुभूति प्रकट होती है किन्तु उदाहरण के लिए यहाँ कुछ एक का ही वर्णन किया गया है।

सती प्रथा

सम्पुर्ण मुगलकाल में हिन्दु समाज के सर्वण समाज में यह प्रथा अत्यधिक रूप से प्रसिद्ध थी। राजपुत राजघरानों में सती प्रथा का प्रचलन था और साम्राज्य की ओर से इस प्रथा पर प्रतिबंध भी दिखाई नहीं पड़ता है। संभवतः इसका कारण यह रहा हो कि राजपूत राजघराने इसे धार्मिक और सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक समझते थे। स्वेच्छा से भी की जाने वाली सती प्रथा पर यदि प्रतिबंध लगाया जाता तो संभव था कि राजपूतों द्वारा विस्तृत रूप में मुगल साम्राज्य के विरूद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया जाता। इसलिए राजघरानों की नाराजगी से बचने के लिए इस प्रथा को समाप्त करने का प्रयत्न नहीं किया गया होगा।[4] 24 जीकादा सन् जलूस 10 (8 मई 1667 ई0) शाम के समय जुमदतुल्मुल्क ने आकिलखां को संदेश भेजा कि पृथ्वीसिंह पुत्र महाराजा जसवन्तसिंह, जो 2000 जात 1000 सवार का मनसब रखता था, का चेचक की बीमारी के कारण देहान्त हो गया। राजा अनिरूद्धसिंह (हाड़ा) की पुत्री उसके साथ सती हुई। रावल की बेटी गर्भवती होने के कारण जीवित रही। सम्राट ने दीवान नहीं लगाया (दीवान मौकूफ फरमूदन्द) इससे यह भी ज्ञात हुआ कि मृतक की गर्भवती स्त्री उसके साथ चिंता में नहीं जलती थी। लेकिन यह कुप्रथा सम्पुर्ण मुगलकाल मे महिला जाति पर जीता जागता अत्याचार था जिसे रोकने के मुगलों द्वारा स्थाई समाधान नहीं किये गये। मुगल महिलाओं ने मुगल सम्राटों के हरम के अंदर अपना पूरा जीवन बिताया। खौफ और रहस्य की भावना आज भी किसी के दिमाग में भर जाती है जब कोई मुगल हरम के बारे मे सुनता है। कई चीजों को लिखा गया है और कई चीजों से मुगल महिलाओं के जीवन के बारे में अनुमान लगाया गया है। जिस तरह से मुगल महिलाओं ने अपना जीवन बिताया, उनके रहने के स्थान, उनके भोजन और कपड़े, परदा और धर्म, सुख और अतीत, सीखने और शिक्षा और यहां तक

कि उनके प्यार और आक्रोश, कई लोगों के लिए हमेशा से ही दिलचस्पी का विषय रहे हैं। मुगल महिलाऐं कोई साधारण महिला नहीं थीं। वह शाही महिला थीं और इसलिए, उनका सामाजिक जीवन निश्चित रूप से मध्ययुगीन महिलाओं की तुलना में बहुत अलग था।

हरम के कैदियों, उनके रोजमर्रा के जीवन और सम्राट के साथ उनके संबंध मुगल बादशाहों की हरमों में बड़ी संख्या में महिलाऐं थीं और इसमें विभिन्न जातियों, प्रांतों और समुदायों की महिलाएँ रहती थीं। मनुची ने कहा कि ''मुगल महल के भीतर अलग–अलग कई जातियों की दो हजार महिलाएं थीं'' मुस्लिम महिलाओं के अलावा, राजपूत महिलाओं सहित हिंदू महिलाऐं भी थीं, और यहां तक कि मुगल सम्राटों के हरम में ईसाई महिलाऐं भी थीं। बाबर और हुमायूं के हरम मामूली थे। आकार में। लेकिन बाद में अकबर के समय से मुगल हरम में बड़ी संख्या में महिलाओं के होने का एक विस्तृत मामला बन गया। अकबर के हरम में लगभग 5000 महिलाऐं हैं। जहाँगीर, शाहजहाँ और शुद्ध औरंगजेब के हरम भी बहुत बड़े थे। हॉकिन्स के अनुसार, जहाँगीर की ''तीन सौ पत्नियाँ जहाँ रानियों के रूप में प्रमुख होती हैं।''टेरी के अनुमानों के अनुसार जहाँगीर के हरम में ''चार पत्नियाँ, और 'रखैल और बगल की महिलाएँ शामिल थीं, जो उनकी संख्या को पूर्ण हजार बनाने के लिए पर्याप्त थीं।[5]''

जब कोई उन महिलाओं के बारे में सोचता है, जो हरम के अंदर रहती थीं, तो केवल राजा की पत्नियों की तस्वीरें, नाचने और गाने वाली लड़कियों और गुलाम और नौकर लड़कियों की तस्वीर उनके दिमाग में आती है। लेकिन हरम में केवल इन श्रेणियों से संबंधित महिलाओं का समावेश नहीं था। बेशक, यह महिलाएं हरम में रहती थीं, लेकिन इनके अलावा कई अन्य महिलाओं भी थी जो हरम के अंदर रहती थी। वह राजा की माँ, सौतेली माँ, पालक माता, चाची, दादी, बहनें, बेटियाँ और अन्य महिला रिश्तेदार थीं। यहां तक कि नर बच्चे बड़े होने तक हरम के अंदर रहते थे। तब, वहाँ महिला–प्रतीक्षा रत, दास और नौकर लड़कियाँ और कई महिला अधिकारी और गार्ड थे जिन्हें सम्राट द्वारा हरम की विभिन्न आवश्यकताओं की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था। हरम के क्वार्टर के आस – पास के इलाकों की रक्षा के लिए हिजड़े भी थे। महिला भाग्य टेलर भी हरम के अंदर रहते थे। कुछ महिलाओं और योनियों ने जासूसों के रूप में काम किया और उन्होंने सम्राट को हरम महिलाओं की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। महिलाएं आमतौर पर शादी, जन्म, खरीद, नियुक्तिया उपहार के रूप में हरम में आती हैं।[6]

मुगल महिलाओं की जीवन शैली

हरम में पर्दाप्रथा के साथ कठोर नियमों से हरम महिलाओं का जीवन चलता था। महिलाओं को आमतौर पर हरम से बाहर निकलने की स्वतंत्रता नहीं थी क्योंकि वह पसंद करते थे। अगर वह बाहर जाते, तो उनके चेहरे घूंघट के पीछे अच्छे से छिपे होते थे। लेकिन हरम के अंदर वे प्रसन्न हो सकते थे। उन्हें विभिन्न प्रकार की विलासिता और आराम भी प्रदान किए गए थे। हरम में दैनिक जीवन उल्लास और उमंग से भरा था कम से कम, यह वह तस्वीर है जो बेर्नियर और मनुची जैसे विदेशी, जो एक समय में चिकित्सकों के रूप में हरम तक पहुंचते थे, अपने खातों में देते हैं। उन्होंने बड़े आराम, विलासिता और भौतिकवादी सुख का जीवन व्यतीत किया। यह महिलाएं शानदार अपार्टमेंट में

शानदार तरीके से रहती थीं सुसज्जित सुंदर बगीचों फुब्बारो टैंकों और पानी के चैनलों के साथ संलग्न। उन्होंने बेहतरीन सामग्री से बने सुंदर और महंगे कपड़े पहने और खुद को सिर से पाँव तक आभूषणों से सजाया। वे शायद ही कभी बाहर गए, लेकिन जब उन्होंने किया, ज्यादातर बार रैंक की महिलाओं ने शैली में आराम से यात्रा की और हाथी की पीठ पर और पाल की से सुशोभित होदे में। सम्राट और उनके हरम कैदियों की दैनिक जरूरतें थीं शाही विभागों द्वारा काफी हद तक पूरा किया गया। इनका भोजन शाही रसोई से होता है जिसे मटकाब कहा जाता है। अकबर खाने पीने का पानी और शराब प्रदान करता था। ग्रीष्म काल के दौरान, शाही घराने के लिए पानी बहुत कम था। मेवा खान ने गृहस्थी को फल प्रदान किया। रिकाब खान या बेकरी में रोटी की आपूर्ति का प्रभार था। शाही कारखानों ने शाही महिलाओं को सुंदर कपड़े, आभूषण, घरेलू लेख और फैंसी लेख प्रदान किए।[6]

मुगलों के आहार में कई प्रकार के समृद्ध और स्वादिष्ट व्यंजन शामिल थे। के रूप में जाना जाने वाला शाही रसोईघर विस्तृत रूप से व्यवस्थित था। मुगल बादशाह शाही रसोई के खर्च को पूरा करने के लिए रोजाना एक हजार रुपये खर्च करते थे। विभिन्न देशों के रसोइयों को शाही रसोई में काम पर लगाया जाता था और वे रोज कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करते थे। सम्राट ने हरम में अपना भोजन लिया। अबुल फजल के अनुसार, ''हरम की महिलाओं को सुबह के समय रसोई से भोजन ले जाने की अनुमति होती है, और रात तक चलती है।'' शाही पुरुषों की तरह चबाने, सुपारी (पान) शाही महिलाओं की रोजमर्रा की एक आवश्यक आदत बन गई। इसने होठों और दांतों को लाल कर दिया था और यह उन दिनों में सुंदरता की चीज माना जाता था। पान को आगंतुकों के सम्मान के रूप में भी प्रस्तुत किया गया था। चूंकि हरम महिलाएं शायद ही कभी महल के बाहर जाती थीं, उनका ज्यादातर समय निवास के अंदर ही व्यतीत होता था। हरम के कर्मचारियों को प्रदर्शन करने के लिए अपने संबंधित कर्तव्य थे। शाही महिलाएँ ज्यादातर समय अपने आप को सजाना, संवारना और संवारना चाहती हैं। हरम के अंदर उनके मनोरंजन के लिए कई इंतजाम किए गए थे। संगीत और नृत्य की महिला अधीक्षक और कई महिला गायक और नर्तकियां थीं। महिलाओं ने कई इनडोर खेल खेले। कभी–कभी वे गुलिस्तान जैसी किताबें पढ़ते हैं और शेख सादी शिराजी के उद्यान। शाही महिलाओं में से कुछ दूसरों की तुलना में एक कदम आगे निकल गईं और उन्होंने स्मारकों और उद्यानों के निर्माण जैसे महान काम किए, जिसमें साहित्य और व्यापार में भाग लेने वाले साहित्यिक मूल्य के कार्यों की रचना की और कभी–कभी समकालीन राजनीति में भाग भी लिया। कुल मिलाकर, मुगल महिला का जीवन सम्राट के दौर में घूमता था। सभी हरम महिलाओं को समान स्थिति प्राप्त नहीं थी। उनकी स्थिति और हरम में अधिकार और सम्मान की स्थिति सम्राट के जीवन या उनके दिल में उनके स्थान से अलग थी। 'मेरे बीच आपसी संबंध आमतौर पर दोस्ताना और सौहार्दपूर्ण थे। लेकिन ईष्शायें प्रचलित थीं हालांकि इसे सीधे नहीं दिखाया गया था। सभी ने सम्राट को खुश करने की पूरी कोशिश की और कोई भी उसके बुरे गुणों जैसे ईर्ष्या, झगड़ालू स्वभाव या छोटे स्वभाव वाला रवैया नहीं दिखाना चाहता था। राजा या राजकुमार को अपने पहले पुरुष बच्चे को देने के लिए एक महान सम्मान और प्रतियोगिता थी, जिसके परिणाम स्वरूप अक्सर एक महिला को उसके आसपास की अन्य महिलाओं की गर्भधारण की कोशिश कर रही होती थी। उनके लिए चिंता या अप्रियता आमतौर पर उनसे दूर रखी जाती थी।[7]

आमतौर पर पूरे महल में मृत्यु का उल्लेख नहीं किया गया था। जब एक महिला बीमार पड़ी तो उसे बीमार खाना हमें स्थानांतरित कर दिया गया।केवल बहुत ही प्रमुख महिलाओ ंकी मृत्यु का शोक था। एक महिला ने जितनी महत्वपूर्ण स्थिति पर कब्जा किया, उतने अधिक विशेषाधिकार प्राप्त किए। यदि वह निःसंतान थी, तो उसे किसी अन्य वफादार महिला के बच्चे को अपने रूप में लाने की अनुमति थी। बाबर के सिद्धांत की पत्नियो मे ंसे एक माहम बेगम और हुमायूँ की माँ ने हुमायूँ के जन्म के बाद चार बच्चों को खो दिया था। उसे हिंडाल और गुलबदन दिया गया, दूसरी पत्नी दिलदार बेगम के बच्चे और उसने उन्हें पाला। अकबर की निःसंतान पहली पत्नी रूक्काया सुल्तान बेगम को राजकुमार सलीम के बेटे खुर्रम को बच्चा पैदा होने के बाद दिया गया था। के बाद वह उसे अपने साथ ले आई। अपने संस्मरणों में जहाँगीर द्वारा बताए गए प्यार और देखभाल के बारे में जब उसने लिखा, ''मेरे पिता ने मेरे बेटे खुर्रम को अपने आरोप में दे दिया था, और वह उससे हजार गुना अधिक प्यार करता था, अगर वह उसका खुद का था। शाहजहाँ का दूसरा साथी राजकुमार शुजा जहाँगीर की इच्छा के अनुसार नूरजहाँ बेगम द्वारा लाया गया। मुगल युग के दौरान, नूरजहाँ और मुमताज महल के मामले को छोड़कर, आमतौर पर क्षेत्र की पहली महिला सम्राट की माँ थी और उनकी मुख्यरानी नहीं थी।, महारानी माता की मृत्यु के बाद ही एम्पोर के मुख्य संरक्षक ने उनकी जगह ली।[8]

बाबर से शुरू होने वाले मुगल सम्राट होंने पर शानदार प्रदर्शन किया अपनी माताओं के सम्मान में बाबरनामा और गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा के कई उदाहरण हैं जो साम्राज्यों द्वारा माताओं को दिखाए गए बड़े सम्मान को प्रकट करते हैं। राज्याभिषेक समारोहों के बाद यह वह मां थी जिसे सम्राट ने पहली बार देखा था। इसलिए त्यौहारों और जन्मदिनों की तरह आनन्दित होने के अन्य दिनों में भी ऐसा ही था। अबुल फजल ने कहा कि जब लंबे उपवास समाप्त हो गए, तो मांस का पहला व्यंजन अकबर के पास उसकी मां के स्थान से चला गया। एक बार जब अकबर की माँ लाहौर से आगरा तक एक पालकी से यात्रा कर रही थीं, तो अकबर उनके साथ यात्रा कर रहा था। एक स्थान पर उसने पालकी को अपने कंधों पर ले लिया, आहद ने उसे नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँचाया। तुजूके जहाँगीरी में एक स्थान पर जहाँगीर ने अपनी माँ के लिए अपने प्यार और सम्मान को इन शब्दों में प्रकट किया उसी दिन महाम हिम मिजोर–जमानी (उनकी माँ) आगरा से आए, और मैंने अनन्त सौभाग्य प्राप्त किया उस पर प्रतीक्षा का आशीर्वाद। मुझे आशा है कि उसके स्नेह और प्यार की छाया इस दमन के सिर पर बारह मासी हो सकती है। मुगल गृहस्थी में वास्तविक माताओं के अलावा काफी कम संख्या में माताएँ पाई जाती थीं। समय–समय पर उत्पन्न होने वाले कई राजनीतिक और अन्य संकटों के कारण, कई बार बच्चा वास्तविक मां से अलग हो जाता था और इसलिए उसे देखा जाता था। यहां तक कि हरम की अन्य महिलाओं द्वारा खिलाया गया स्तन। अन्य नर्सें भी थी, सभी नर्सों ने हरम में उच्च पद पर कब्जा कर लिया और अनागास के नाम से जानी गईं।[9] अपने बचपन में अकबर अपनी माँ हमीदा बानो से कुछ सालों के लिए दूर हो गए थे क्योंकि मौजूदा राजनीतिक हालात थे। अकबर की इन नर्सों में से कुछ शम्स–उद–दीन की पत्नी जिजी अनगा थी या फख्र–अन–निसा नादिम कोका की पत्नी, तोगी बेगी की पत्नी कोकी अनगा, सादी यार कोका की माँ पीजीजान अनागा या खलिदार अनगा या बीबी रूपाय भवाल अनगा, हुमायूँ की एक उपपत्नी हकीमा नामक एक महिला थी और जैन खान कोका की माँ, लेकिन उनकी सभी नर्सों में सबसे प्रमुख थीं महाम अनगा जिन्होंने अकबर के शासन काल के शुरुआती वर्षों के दौरान एक महत्वपूर्ण राजनीतिक भूमिका निभाई

थी। मुगल सम्राटों ने अपनी पालक माताओं का बहुत सम्मान किया, अकबर महम अनगा और जिजी अनगा जहाँगीर के बहुत शौकीन थे उनके संस्मरणों ने उनकी पालक माँ, कुतुब–उद–दीन खान कोका की माँ की मृत्यु की सूचना निम्न शब्दों में दी। कुतुब–उद–दीन खान कोका की माँ जिसने मुझे अपना दूध पिलाया था और वहमेरी माँ के रूप में थी या मेरी ही तरह की माँ की तुलना में दयालु थी, जो भगवान की दया के लिए प्रतिबद्ध थी।, मैंने उसकी लाश के पैरों को अपने कंधों पर रखा औरउसे रास्ते का एक हिस्सा (उसकी कब्र के पास) ले गया। अत्यंत दुःख और शोक के माध्यम से मुझे खाने के लिए कुछ दिनों तक कोई झुकाव नहीं था, और मैंने अपने कपड़े नहीं बदले।[10]

निष्कर्ष

अपनी माता और पालक माताओं के अलावा, उनके पिता की अन्य पत्नियों को मुगलों द्वाराबहुत सम्मान के साथ देखा जाता था।, जोधाबाई जहांगीर की माँ थी। लेकिन रूकैया बेगम और सलिमा सुल्तान बेगम के लिए भी उनका बहुत सम्मान और स्नेह था।, अकबर ने हाजी बेगम का बहुत सम्मान किया। दादी, चाची और अन्य बुजुर्ग संबंधों का भी सम्मान किया गया और उनकी अच्छी देखभाल की गई। बाबर और जहाँगीर और गुलबदन बेगम के हुमायूँनामा के संस्मरणों से कई बार यह पता चलता है कि मुगल सम्राट ने अपनी माताओं और अन्य बुजुर्ग महिला रिश्तेदारों के लिए सम्मान किया था। जैसा बेवरिज का कहना है कि, ''यह कहा जा सकता है कि बाबर और हैदर दोनों ही इस राय से अवगत कराते हैं कि बड़ी महिलाओं के लिए धोखेबाजी उनकी उम्र और सेट का एक स्थायी लक्षण था। इन महिलाओं को भी मुश्किल समय सहित कई बार, उनके सक्रिय समर्थन का श्रेय दिया जाता है। उनके सम्राट और कई संकट हल हो गए थे। बाबरनामा की कई घटनाओं से पता चलता है कि बाबर ने अपने परिवार की महिलाओं के लिए सम्मान की मात्रा बताई थी भले ही वह उनके प्रतिद्वंद्वी शिविर के थे। गुलबदन बेगम के खातों से भी हमारे पास यह साबित होता है। एक जगह गुलबदन बेगम ने लिखाः सभी चार कामों के माध्यम से, जो मेरे पिता आगरा में थे, वह अपनी पितृ–मौसी को देखने के लिए शुक्रवार को जाते थे। एक दिन यह बहुत गर्म था, और उनकी महारानी मेरी (अकां) ने कहा, ''हवा बहुत है, अगर आप इस शुक्रवार को नहीं गए तो यह कैसे होगा भिखारियों को परेशान नहीं किया जाएगा। महामहिम ने कहा, महाम! यह आश्चर्यजनक है कि आपको ऐसी बातें कहनी चाहिए! अबू–साकी बेटियों सुल्तान मिर्जा , जो पिता और भाइयों से वंचित रह गए हैं अगर मैं उन्हें खुश नहीं करता, तो यह कैसे किया जाता है। मुगल हरम में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान पर सम्राट की पत्नियों का कब्जा था।सभी मुगल सम्राटों की कई पत्नियां थीं।लेकिन सभी पत्नियों को समान सम्मान और सुविधाओं का आनंद नहीं मिला, आमतौर पर मुख्य रानी और अन्य प्रमुख रानियाँ बड़े–बड़े विलासों के बीच बड़े महलों में रहती थीं, उनके पास कई नौकर थे जो उन पर उपस्थित थे और उन्हें सम्राट से वार्षिक भत्ते के रूप में बहुत अधिक धन और धन मिला।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 Akbar Nama, Vol. II, tr. Beveridge (Calcutta : 1912), p. 230.

2 Tuzuk-i-Jehangiri (tr). Vol. 1, pp. 84-85.

3 A.S. Beveridge in Humayun Nama, p. 20.

4 GulbadanBegam, Humayun Nama (tr), p. 97.

5 M.S. Commissariat, Mandelslo's Travels in Western India (London : 1931), p. 46; Herklots, lslam in India (London etc; 1921), p. 330.\

6 Quoted by Yusuf Husain in Glimpses of Medieval Indian Culture.

7 Here in Deccan and Golkunda men and women go with a cloth bound about their middle without any more apparel."

8 वे सारे तथा समान सोच रखने वाले अन्य जरूरी शक्ति संचय में वंचित कर दिए गए थे तथा चोर अंधकार में छोड़ दिए गए थे। अब्दुर्रहीम खानेखानाँ ने प्रभावशाली 'गुट' में समझौता कर लिया, पर महावत खाँ जैसे स्वाभिमानी लोगों में उन्हें सम्मान देने में इनकार कर दिया।

9 बेनीप्रसाद ''ए हिस्ट्री आम्न जहाँगीर'', 1940, पृ0 159–172

10 ईश्वरी प्रसादः 'द मुगल एम्पायर', पृ0 200

6 Roe, Vol. II, p.421; Tapan Kumar Ray Chaudhary, Bengal Under Akbar and Jehangir (Calcutta : 1953), p. 202.

7 Manucci, Memoirs of the Mughal Court, p. 33.

8 A.S. Beveridge in GulbadanBcgan'sHumayun Nama (New Delhi: 1983).p.8.

9 Mutamid Khan, Iqbal Nnma-i- Jahangiri (Text), (Calcutta : 1865). p. 251; Tuzuk-i-Jehangiri v. Rogers and Beveridge, Vol. 1, p. 48.